ORIGINAL RESEARCH PAPER

Management

KEY WORDS: ''सबके लिए शिक्षा'', महाविद्यालय–विश्वविद्यालय,परीक्षा, पढ़ाई, डिग्री, मानवीय एवं नैतिक मूल्य, विद्यार्थियों, जीविकोपार्जन।

वर्तमान भारत में शिक्षा की दशा और दिशा

इन्दुबाला सहायक प्रोफेसर, डॉ. गणेशदास डी.ए.वी. कॉलेज ऑफ एजुकेशन फॉर वूमेन, करनाल–132001

ABSTRACT

हमारी शिक्षा व्यवस्था पर एक वृहत् जनसमूह को शिक्षित करने का उत्तरदायित्व है। अगर कुछ चुनौतियों की बात करें तो ''सबके लिए शिक्षा'' की सुविधा उपलब्ध करवाना है तो प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति से यह अपेक्षा की जानी चाहिए कि वह इस लक्ष्य प्राप्ति में सहयोग प्रदान करें। 'Each one Teach one' का नारा इस दिशा में सफलता दिला सकता है। पढ़ाई, परीक्षा अंकों की दौड़ में चाहे–अनचाहे व्यक्तित्व विकास की बहुत सी समस्याएँ अनुसुलझी रह जाती हैं, जो कि भविष्य में निराशा, हताशा और कुण्ठा के रूप में अपराधी वृत्तियों को जन्म देती हैं। क्या यह शिक्षा बच्चे को यह स्वतन्त्रता देती है कि वो रमन, टैगोर, कलाम, कल्पना, सुनीता बन सकें। शिक्षा समाज, परिवर्तन का प्रेरक बल है। वही शिक्षक परिव्राजक है। एक बात ओर प्रासंगिक है कि अगर हम इस विद्या के मंदिर का कायाकल्प होने पर पुजारी नहीं बदलें तो यह बदलाव अर्थहीन एवं प्रभावहीन होगा, अर्थात शिक्षक को भी 'सत्यम शिवम सुन्दरम' को अंगीकृत करना होगा, क्योंकि एक इंजीनियर की गलती किसी नींव में दब सकती है किसी डॉक्टर की गलती किसी कब्र के नीचे दब सकती है, परन्तु एक शिक्षक की गलती सम्पूर्ण राष्ट्र में झलकती है।प्राथमिक शिक्षा हमारे शिक्षा रूपी भव्य भवन की आधारशिला है, किंतु यह आधार ही जर्जर अवस्था में है। कमजोर आर्थिक स्थिति, राजनीति का भय, अल्प शैक्षिक योग्यता आदि से त्रस्त शिक्षक, गिनती, पहाड़े, अक्षर ज्ञान कराने को ही शिक्षा मान बैठे हैं। इस स्तर पर सुधार की अत्यन्त आवश्यकता है। वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप जब तक पाठ्यक्रम में मूलभूत बुनियादी बदलाव और परिवर्तन नहीं किये जायेंगे, तब तक तो यह तस्वीर बदलने वाली नहीं है। क्या वर्तमान शिक्षा पद्धति से व्यक्तित्व विकास और देश समाज की उन्नति का लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। आज हमें ऐसे पाठ्यक्रम की जरूरत है, जो बच्चों में मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, भावात्मक संवेदनशीलता और समानता को विकसित करे।

देश की शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य के बारे में एक कवि ने अपनी चार पंक्तियों में वर्णन किया है:–

"चलो जलाएं दीप वहां, जहाँ अभी भी अंधेरा है।,
शिक्षा पाकर भिक्षा मांगे, युवजन खाए ठोकर आज।
आजादी का स्वप्न दिखाकर, पाखंडी करते हैं राज।।
भ्रष्ट व्यवस्था ने भी डाला, अब यहाँ डेरा है।
चलो जलाएं दीप वहां जहां अभी भी अंधेरा है।"

भारत में जो शिक्षा पद्धति प्रचलित है उसके कई पक्षों में सुधार की आवश्यकता है। हमारी शिक्षा व्यवस्था पर एक वृहत् जनसमूह को शिक्षित करने का उत्तरदायित्व है। साधन और संसाधन बहुत सीमित हैं, परिस्थितियाँ भी अनुकूल नहीं फिर भी हम लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर प्रयत्नशील हैं। फिर भी हम दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ें, तो इस निराशाजनक स्थिति से उभर सकते हैं। अगर कुछ चुनौतियों की बात करें तो ''सबके लिए शिक्षा'' की सुविधा उपलब्ध करवाना है तो प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति से यह अपेक्षा की जानी चाहिए कि वह इस लक्ष्य प्राप्ति में सहयोग प्रदान करें। 'Each one Teach one' का नारा इस दिशा में सफलता दिला सकता है। इसके लिए सरकारी तंत्रों के साथ स्वयंसेवी और सामाजिक संगठनों को भी जोड़ना होगा। विद्यालयों में संख्यात्मक नामांकन की बढ़ोतरी की बजाय न्यूनतम अधिगम स्तर पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

स्वतंत्रता के बाद हमने सबके लिए शिक्षा प्राप्ति पर तो ध्यान दिया पर सबके लिए समान गुणवत्ता वाली शिक्षा का लक्ष्य अभी भी कोसों दूर है। निजी और सरकारी स्कूलों में उपलब्ध संसाधन और सुविधाओं एवं प्रदान की जा रही शिक्षा की गुणवत्ता में व्यापक अंतर मौजूद है। भारत देश में यह संभव तो नहीं कि सबको निजी स्कूलों जैसी सुविधाएँ उपलब्ध करवाई जा सकें, परन्तु इस दिशा में प्रयास तो अवश्य होना चाहिए कि सभी को समान शिक्षा के अन्तर्गत अच्छी शिक्षा को कम खर्चीला कैसे बनाया जाए। अगर हम यह लक्ष्य लेकर चल रहे हैं कि सबके लिए शिक्षा हो तो यह लक्ष्य परम्परागत संस्थागत शिक्षा पद्धति के माध्यम से प्राप्त नहीं हो सकता। इसके लिए शिक्षा के अन्य विकल्प जनसामान्य को उपलब्ध करवाने होंगे। शिक्षा में तकनीकी का उपयोग अत्यधिक हो रहा है किंतु इन तकनीकी साधनों को शिक्षक का विकल्प न मानकर सहयोगी मानकर प्रयोग करने का लक्ष्य हो इसे मैं दुर्भाग्यपूर्ण ही मानती हूँ कि शिक्षक का अधिकांश समय सूचनाओं को विद्यार्थियों तक पहुंचाने में लग जाता है। अर्थात् पढ़ाने के अलावा बहुत सारे अन्य कार्य।

औद्योगिक क्रांति के कारण नये भारतीय समाज का निर्माण हम देख रहे हैं जिसमें कि कई शाश्वत मूल्यों का अवमूल्यन हो गया है। प्रतिस्पर्धा की प्रधानता, असहयोग की भावना और साध्य–साधनों की तुलना में महत्वपूर्ण हो गये। भौतिक सम्पनता तो आई, परन्तु नैतिक मूल्यों के पतन की कीमत पर। मेरा मानना है कि शिक्षा ही मानवीय एवं नैतिक मूल्यों की प्रतिस्थापन का सबसे सशक्त साधन है। वर्तमान में हमारी शिक्षा भटक गई है। हम कभी शिक्षा को डिग्री से जोड़ते हैं, कभी कार्य के अनुभव से..... पर कभी यह सोचा कि हमारी शिक्षा का दर्शन क्या होना चाहिए। अगर वर्तमान में शिक्षा की प्रासंगिकता की बात करें तो हम जिस शिक्षा व्यवस्था को ढो रहे हैं उसमें व्यावसायिकता इतनी हावी होती जा रही है कि जैंडर भेद–भाव, महिला हिंसा, स्वास्थ्य, सुरक्षा जैसे मुद्दे अनावश्यक लगते हैं। स्कूलों में पढ़ाई का बोझ किसी को इस ओर सोचने के लिए समय नहीं देता। पढ़ाई, परीक्षा अंकों की दौड़ में चाहे–अनचाहे व्यक्तित्व विकास की बहुत सी समस्याएँ अनुसुलझी रह जाती हैं, जो कि भविष्य में निराशा, हताशा और कुण्ठा के रूप में अपराधी वृत्तियों को जन्म देती हैं। क्या यह शिक्षा बच्चे को यह स्वतन्त्रता देती है कि वो रमन, टैगोर, कलाम, कल्पना, सुनीता बन सकें।

परिवर्तन शाश्वत है– तो देश, काल व परिस्थिति के अनुसार शिक्षा भी परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। शिक्षा समाज, परिवर्तन का प्रेरक बल है। वही शिक्षक परिव्राजक है। एक बात ओर प्रासंगिक है कि अगर हम इस विद्या के मंदिर का कायाकल्प होने पर पुजारी नहीं बदलें तो यह बदलाव अर्थहीन एवं प्रभावहीन होगा, अर्थात शिक्षक को भी 'सत्यम शिवम सुन्दरम' को अंगीकृत करना होगा, क्योंकि एक इंजीनियर की गलती किसी नींव में दब सकती है किसी डॉक्टर की गलती किसी कब्र के नीचे दब सकती है, परन्तु एक शिक्षक की गलती सम्पूर्ण राष्ट्र में झलकती है। शिक्षा के रसातलित होते स्तर को रोकने के लिए एक प्रयास यह भी संभव है कि कृपांकों की समाप्ति, अंकों में वृद्धि करने पर रोक, विभिन्न विषयों की मौखिक परीक्षाओं की समाप्ति और परिणामों के प्रतिशत की पाबंदी से मुक्त कर दें तो सुधार संभव है।

वर्तमान में ज्ञान के विस्फोट में वृद्धि तीव्र गति से हुई है, किन्तु इस विस्फोट की चुनौती को स्वीकार करने के लिए हमारी शिक्षा संस्थाओं के पास साधन और संसाधनों का नितांत अभाव है। प्राथमिक शिक्षा हमारे शिक्षा रूपी भव्य भवन की आधारशिला है, किंतु यह आधार ही जर्जर अवस्था में है। कमजोर आर्थिक स्थिति, राजनीति का भय, अल्प शैक्षिक योग्यता आदि से त्रस्त शिक्षक, गिनती, पहाड़े, अक्षर ज्ञान कराने को ही शिक्षा मान बैठे हैं। इस स्तर पर सुधार की अत्यन्त आवश्यकता है। वर्तमान में हमारे देश में शिक्षा के कथित मंदिर आनन–फानन में कुकरमुत्ते की तरह उगे हैं, जिसका मकसद बच्चों का भविष्य निर्माण करना नहीं, बल्कि अपनी तिजोरी भरना है, लेकिन हमारी सड़ी–गली राजनैतिक व्यवस्था ने बिना शिक्षक और भवन के पेड़ के नीचे ही स्कूल खुलवा दिये। यहां जवाबदेही तय होनी चाहिए कि जिसने उस ऐसी संस्था को मान्यता प्रदान की है, उस बोर्ड पर कार्यवाही होनी चाहिए।

अगर उच्च शिक्षा की समीक्षा करें तो देश के लिए बड़ी ही त्रासद स्थिति की विश्व के शीर्ष सौ विश्वविद्यालयों की सूची में भारत कहीं नहीं है, अर्थात् विश्व को भारत की उच्च शिक्षा ने प्रभावित नहीं किया। इस क्षेत्र में ऐसी दूरगामी योजनाएँ हों कि हम गुणवत्ता का स्तर बनाते हुए संसाधन जुटा सकें। आजादी के बाद देश में हम ऐसा कोई बुनियादी ढांचा विकसित नहीं कर पाये जो कि शोध और अनुसंधान को प्रोत्साहित करें। देश में वैज्ञानिक शोध और अनुसंधान की दशा शोचनीय है और हमारे विश्वविद्यालय एम फिल और पीएच. डी की सिर्फ डिग्री बांट रहे हैं। कई विश्वविद्यालयों में तो पैसे लेकर डिग्री देने का खुला खेल चल रहा है। रही–सही कसर स्ववित्त पोषित कोर्स के माध्यम से डिग्री बांट कर पूरी हो गई। महाविद्यालय में विकास समिति के नाम पर शोषण और लूट का खेल जारी है।

शिक्षा किसी भी देश के लिए सबसे ज्यादा आवश्यक तत्त्वों में एक है एक शिक्षित समाज ही देश को उन्नत और समृद्ध बनाने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।शिक्षा विहीन समाज साक्षात् पशु के समान बताया गया है। संस्कृत के महान कवि श्री भर्तृहरी जी ने स्पष्ट रूप से कहा भी है – "शिक्षा विहीन साक्षात् पशु पुच्छ विशाणहीनः . "हमारे वैदिक मन्त्रों में भी मंत्रित है– असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय, इसका अर्थ हुआ कि विद्या अथवा शिक्षा सत्य का, ज्ञान का, अमरता का कारण है. जब शिक्षा हमें अमरता प्रदान कराने में सहायक है तो एक शिक्षित समाज देश को अमर करने में अपनी भूमिका क्यों नही निभा सकता? अब जब शिक्षित समाज की बात उठी है तो सबसे पहले शिक्षित समाज में नाम आता है देश को शिक्षित करने वाले हमारे आदरणीय शिक्षकगण का। अब जब शिक्षकों की बात आई है तो हमें याद आती है आचार्य चाणक्य की जिन्होंने अपना शिक्षण धर्म बखूबी निभाया, देश के प्रति भी और समाज के प्रति भी, ऐसे और भी इस देश में बहुत से अनुकरणीय उदारहण हैं, जो शिक्षकों को सम्मानीय स्थान दिलाने में विशिष्ट भूमिका निभाते है परन्तु आज इस देश को जिसे दुनिया जगतगुरू की उपाधि से विभूषित कर चुकी है। शिक्षा के स्तर को स्तरीय स्थान दिलाने के लिए भी दो–चार होना पड़ रहा है. यह बड़े ही दुःख का विषय है कि आज हमारे इस विशाल देश के स्तर में लगातार गिरावट का सामना करना पड़ रहा है शिक्षा के सबसे आवश्यक

स्तम विद्यार्थी, शिक्षक और पाठ्यक्रम सभी में लगातार गिरावट आ रही है. इसके लिए जिम्मेदार कौन है? सरकार? समाज? विद्यार्थी? या फिर शिक्षक? मैं कहता हूँ ये सभी इसके लिए जिम्मेदार है।

वर्तमान शिक्षा में गुरु या अध्यापक श्रद्धा का पात्र न होकर वेतन भोगी नौकर बन गया। अध्यापक की भूमिका गौण हो गई तथा विद्यालय–विश्वविद्यालय के प्रबन्ध तन्त्र की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है। वर्तमान शिक्षा में अध्यापक विद्यार्थी को योग्य बनाने के दायित्व से रहित है। इसलिए शिक्षा के यान्त्रिक हो जाने से डॉक्टर, इंजीनियर जैसे कल–पुर्जों का निर्माण तो हो रहा है लेकिन मानव का निर्माण बाधित हो गया है। शिक्षा को स्वदेशी, भावनात्मक तथा सार्थक बनाने के लिए सबसे पहले कक्षाओं का निर्माण विषयवार हो और विषय के अनुसार कक्षाओं को सजाया जाए। प्रवेश में अध्यापक की भूमिका निर्णायक हो। प्रबन्ध तन्त्र का वर्चस्व कम हो। अध्यापकों पर विद्यार्थी को योग्य बनाने का भार हो। अध्यापकों के प्रशिक्षण एवं चयन में उनके गुण, शील, चरित्र तथा शिक्षण कार्य के प्रति उनके समर्पण भाव का आकलन हो। जल, जमीन, जंगल एवं जानवरों के महत्व का ज्ञान कराने वाले पाठयक्रम का निर्माण हो। मानवीय चरित्र निर्माण के लिए आवश्यक पाठयक्रम का विकास हो। साथ ही अपने राष्ट्र, संस्कृति, भाषा–भूषा, आहार–व्यवहार के प्रति स्वाभिमान एवं गौरव के भाव का विकास हो। इसके अलावा प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर किताबों का बोझ कम हो और डिग्री–सर्टिफिकेट से अधिक योग्यता के विकास का महत्व दिया जाए।

परीक्षाओं का संचालन एवं नियंत्रण इस प्रकार हो कि विद्यार्थी निर्भय होकर उत्साह से परीक्षा में बैठें। निजी शिक्षण संस्थाओं द्वारा किए जा रहे आर्थिक शोषण पर तो अंकुश लगना ही चाहिए। शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश एवं नियुक्तियों के संदर्भ में राजनीतिक हस्तक्षेप समाप्त होना चाहिए। महाविद्यालयों–विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों एवं अध्यापकों को सक्रिय राजनीति में भाग लेने पर रोक लगे। क्योंकि इससे दोनों स्तर पर एकता एवं सद्भाव का विघटन होता है तथा दोनों विभिन्न राजनीतिक गुटों में बंटकर शैक्षणिक परिसर को राजनीति का अखाड़ा बना देते हैं, जिससे विद्यार्थियों का शैक्षणिक विकास बाधित होता है। विद्यार्थी संघ का चुनाव तो हो लेकिन उसमें राजनीतिक गुटबाजीका प्रवेश निषेध हो। विद्यार्थी संघ का मुख्य कार्य इनके समस्याओं का समाधान एवं कल्याण हो। किसी भी राजनीतिक दल या नेताओं को उच्च शिक्षण संस्थानों में अपनी विचारधारा के प्रचार की अनुमति न हो। सभी जातियों एवं सम्प्रदायों के विद्यार्थियों को सभी स्तर पर शिक्षा का समान अधिकार एवं अवसर प्राप्त हो। वर्तमान शिक्षा में यदि ये परिवर्तन किए जा सकें तो संभव है विद्यार्थियों के भटकाव पर काफी हद तक लगाम लग जाए। ये बदलाव छात्रों में योग्यता का विकास करने में भी सहायक सिद्ध होंगे। इसके परिणामस्वरूप उत्पादक प्रतिभा एवं मानवीय चरित्र से युक्त युवा उत्तम नागरिक बनकर परिवार को सुख, समाज को समृद्धि एवं राष्ट्र को शान्ति प्रदान कर सकेंगे।

वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप जब तक पाठयक्रम में मूलभूत बुनियादी बदलाव और परिवर्तन नहीं किये जायेंगे, तब तक तो यह तस्वीर बदलने वाली नहीं है। क्या वर्तमान शिक्षा पद्धति से व्यक्तित्व विकास और देश समाज की उन्नति का लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। आज हमें ऐसे पाठयक्रम की जरूरत है, जो बच्चों में मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, भावात्मक संवेदनशीलता और समानता को विकसित करे। एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था की जरूरत है, जो युवाओं में नागरिक जिम्मेदारी, राष्ट्रप्रेम, आलोचनात्मक और निर्णय क्षमताओं को प्रोत्साहित करे और परिस्थिति के अनुसार समस्याओं से लड़ने की क्षमता प्रदान करें। यहां यह भी जरूरी है कि व्यवहारिक ज्ञान और नैतिकता के साथ बुनियादी प्रशिक्षण भी आवश्यक है, जो कि विद्यार्थियों में जीविकोपार्जन की क्षमता उत्पन्न कर सके। अगर देश के विकास के परिपेक्ष्य में बात करें तो तीन घंटे की परीक्षा प्रणाली से किताबी ज्ञान का बेहतरीन परिचय देने वाले युवाओं के साथ हमें युवा, उद्यमी, वैज्ञानिक, अविष्कारक और स्वावलम्बन के आधार पर रोजगार उत्पन्न करने वाली युवा शक्ति की आवश्यकता है। अंत में यही कहूँगी कि ये हमारा दुर्भाग्य ही है कि हम आज भी मैकाले की शिक्षा व्यवस्था के औपनिवेशिक ढांचे के गुलाम बन कर ही चल रहे हैं। देश में एक खराब प्रथा और चल पड़ी है कि जो भी दल सत्ता में आता है, वह अपने हिसाब से पाठय–पुस्तकों का निर्माण करवाता है। शिक्षा के माध्यम से अपनी राजनैतिक विचारधारा को आरोपित कर उन्हें भविष्य के वोट बैंक के रूप में देखता है। यह आजाद भारत की कड़वी सच्चाई है।

सरकारी योजनाओं में शिक्षणेतर कार्यो की लम्बी फेहरिश्त है.....मसलन जन गणना, भवन गणना, आर्थिक गणना, स्वास्थ परिक्षण, हाउस होल्ड सर्वे(बाल गणना), वोटर लिस्ट पुनरीक्षण (BLO), पशु गणना, आधार कार्ड कैंप, पिछड़ी जाति गणना, छात्रवृत्ति का खाता खुलवाने की ड्यूटी, पल्स पोलियो की ड्यूटी, भवन निर्माण, निर्वाचन में डयूटी ये विद्यालय से इतर है और मिड डे मील, गैस सिलेंडर मंगाने की जिम्मेदारी, ड्रेस वितरण (बिना बजट आये दूकान वालो से उधार मांग कर कपड़े वितरण का आदेश), रंगाई पुताई, फर्नीचर क्रय, पुस्तक वितरण व उक्त के अभिलेख सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी इन कार्यो के लिए यात्रा भता भी नही है। सरकारी शिक्षा के ऐसे परिपेक्ष्य में अगर कुछ कर्मठ शिक्षक हैं तो कामचोर अध्यापक/अध्यापिकाओं की एक निरंतर बडी होती फौज भी है जो शिक्षणेतर सेवाएं दे कर काम चोरी करते है। सावधान! यह शिक्षा प्रणाली हमारे बच्चों का बचपना और युवाओं की तरूणाई छीन रही है और पूरी की पूरी पीढी को कुंठित बना रही है।

डॉ. कलाम जी ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि उनके घर में एक कलैण्डर लगा था। यह जर्मनी में छपा था। सभी देखने वाले जर्मनी की प्रशंसा करते हुए कहते थे कि चित्र बहुत ही सुन्दर है कलाम साहब कहते थे कि नीचे छोटे अक्षरों में लिखा है, यह भी पढ़ो। वह पढ़ने पर लोग कहते हैं कि क्या यह भारतीय के द्वारा लिए गए चित्र हैं? इसी प्रकार आज अपने देश में अंग्रेजी में बोलने वाले को विद्वान माना जाता है। अपनी भाषा में बोलने वाले को हेय दृष्टि से देखा जाता है।

देश की समस्याओं का समाधान शिक्षा से ही सम्भव है। विद्यार्थियों को पानी का दुरूपयोग, बिजली का दुरूपयोग रोकने की शिक्षा दें। छोटी–छोटी बातों के माध्यम से बच्चों को व्यवहारिक शिक्षा दी जा सकती है। कक्षा में सामाजिक–राष्ट्रीय दृष्टिकोण देने की भी आवश्यकता है। केवल 40 मिनट का भाषण पर्याप्त नहीं है। कक्षा में सामाजिक परिवर्तन के प्रयोग करना भी आवश्यक है।

शिक्षा में परिवर्तन यह ईश्वरीय कार्य है। यदि देश का पुनः उत्थान करना है, इसे जगद्गुरू बनाना है तो प्रथम शिक्षा में परिवर्तन आवश्यक है। मैकॉले को मालूम था कि शिक्षा को बदले बिना भारत में शासन करना कठिन है। इसलिए उसने सबसे पहले शिक्षा को बदला। संस्कृत के स्थान पर अंग्रेजी विद्यालय खोले। उसने अपने पिता को पत्र लिखा कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था को बदलने पर उन्हें अत्यन्त खुशी है। लेकिन सही सफलता तब मानी जायेगी कि जब हम यहां नहीं रहेंगे परन्तु शिक्षा व्यवस्था चलती रहेगी। उस शिक्षा प्राप्त, दिखने में तो भारतीय होंगे लेकिन आचार, व्यवहार, विचार से अभारतीय होंगे। वर्तमान में शिक्षा में परिवर्तन यह प्रथम आवश्यकता है। शिक्षक के रूप में हमारा दायित्व इस परिवर्तन के लिए अधिक है। हम शिक्षा में परिवर्तन कि दिशा में चिन्तन, विचार करें यही आपसे प्रार्थना।

साराँश यही है कि हमारी शिक्षा केवल कामचलाऊ वस्तु न हो, वह केवल परीक्षा पास करने का माध्यम न हो, वरन् हमें भली प्रकार जीना सिखाये। विद्या वही है जो हमें इस दुनिया की चिन्ता से मुक्त करके हमारी जीवन नैया को भवसागर से पार लगाने में समर्थ हो– 'स विद्या या विमुक्तये।'

संदर्भः

1. बधेका, गिजुभाईः मॉण्टेशरी शिक्षा पद्धति ,संस्कृत साहित्य, दिल्ली, 2000
2. मिश्र, अमरेशः आधुनिक शिक्षा का स्वरूप, मिश्रा बुक डिपो, इलाहाबाद, 2012
3. वेदालंकार, सत्यकामः शिक्षा सिद्धांत और समस्याएं, राष्ट्रवाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2002
4. शारदा, जितेन्द्रः शिक्षा की समस्याएं, श्रीगणेश प्रकाशन, दिल्ली, 2008
5. पचौरी, महावीरः भारत में आधुनिक शिक्षा रजत प्रकाशन, नई दिल्ली 2011
6. प्रसाद, ,राजेन्द्रः भारतीय शिक्षा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
7. पाण्डेय, बृजेश कुमारः उच्च शिक्षा का परिदृश्य, भारती पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, फैजाबाद, 2013
8. वैश्य,एल.पी.: उच्च शिक्षाः दशा व दिशा, विश्वभारती पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2005
9. धनकर, सं. रोहित, भादू ,राजारामः शिक्षा के संदर्भ और विकल्प, आधार प्रकाशन, पंचकूला, 2011
10. पाण्डेय, रामशकलः शिक्षाः वर्तमान संदर्भ में विकल्प प्रकाशन, इलाहाबाद, 2011
11. कुमार, नरेशः राष्ट्रीय शिक्षा विक्रम प्रकाशन, दिल्ली, 2001
12. लिविंग्सटन, रिचर्ड : शिक्षा की समस्याएं, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रा. लि. नई दिल्ली 2012
13. महतो, बाल्मीकिः शिक्षा, समानता और समाज, आधार प्रकाशन, पंचकूला, 2012
14. पाठक, आर.पी.: प्राचीन भारत में उच्च शिक्षा, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली ,2014